subject -Hindi

Course-BA Hons part-3

paper-6,unit-3

Topic- प्रमुख अलंकारों- भ्रांतिमान,संदेह,विरोधाभास,उपमा,विभावना और अतिशयोक्ति के लक्षण - उदाहरण स्पष्ट करें।

- Dr. Prafull Kumar Associat Professor,HOD Hindi Department RRS College Mokama patna

1-भ्रांतिमान अलंकार-

लक्षण - सादृश्य के कारण एक वस्तु को दूसरी वस्तु मान लेना भ्रांतिमान अलंकार है। भ्रांति का अर्थ है धोखा अर्थात् भ्रांतिमान का अर्थ हुआ धोखे से युक्त। दो वस्तुओं में जब दूरी नजदीकी या ज्ञानेंद्रियों की असमर्थता के कारण भ्रम पैदा हो तो वहाँ भ्रांतिमान अलंकार होता है । रस्सी को देखकर साँप का भ्रम या फिर किसी कागज के टुकड़े को देखकर सिक्का का भ्रम होना इसके उदाहरण होंगे। स्पष्टता के लिए साकेत की ये पंक्तियाँ-

" नाक का मोती अधर की कान्ति से।

बीज दाड़िम का समझ कर भ्रांति से।

देख उसको ही हुआ शुक मौन है।

सोचता है अन्य शुक यह कौन है।"

उर्मिला के नाक का मोती अधरों की कान्ति से श्वेत होकर भी लाल हो गया है। अतः नुकीला नाक का सौंदर्य दूसरे शुक का भ्रम पैदा कर रहा है।अतः यहाँ भ्रांतिमान अलंकार है।

2- सन्देह अलंकार -

लक्षण- उपमेय में उपमान का संशय संदेह अलंकार है। साहित्य दर्पण में लिखा गया है- "संदेह: प्रकृतेऽन्यस्य संशय: प्रतिभोत्थित:।"

दो वस्तुओं की भावना में जहाँ निर्णय कर पाना कठिन हो।जैसे यह सीप है या चाँदी, यह ठूँठ है या मनुष्य,ऐसा संदेह हो तो उसे संदेह अलंकार कहेंगे।

उदाहरण-

"सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है,

कि सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है।"

यहाँ सारी और नारी दोनों में निर्णय कर पाना कठिन हो गया है। अतः यहां संदेह होने के कारण संदेश अलंकार है।

3- विरोधाभास अलंकार -

दो वस्तुओं में विरोध न रहने पर भी विरोध की प्रतीति विरोधाभास अलंकार है।

"आभासत्वे विरोधस्य विरोधाभास इस्यते ।"

विरोधाभास= विरोध+आभास=विरोध की झलक।

उदाहरण -

-"भर लाऊँ सीपी में सागर प्रिय। मेरी अब हार विजय क्या ?"- महादेवी।

यहाँ सीपी में सागर का भरना विरोध का आभास है।

क्योंकि यह असंभव है। अतः विरोधाभास अलंकार है।

4- उपमा अलंकार-

संस्कृत में काव्यप्रकाशकार ने लिखा है- "साधर्म्यमुपमा भेदे"।

अर्थात् लक्षण हुआ- भिन्न पदार्थों के सादृश्य प्रतिपादन को उपमा कहते हैं।

उप(सामने) मा-(मापना) अर्थात् एक वस्तु के सामने दूसरी वस्तु को रखकर उसकी समानता दिखलाना ही उपमा है।

उदाहरण- “बैठी है सीता सदा राम के भीतर

जैसे विद्युति घनश्याम के भीतर।“

यहाँ सीता को राम के भीतर उसी प्रकार बैठी हुई दिखलाया गया है जिस प्रकार बिजली बादल के भीतर होती है।

अतः सीता का बिजली से तथा राम का बादल से समानता दिखलाने के कारण उपमा अलंकार है।

5- विभावना अलंकार -

कारण के अभाव में कार्य की उत्पत्ति का वर्णन विभावना अलंकार है। साहित्य दर्पण में लिखा गया है-

“ विभावना बिना हेतु कार्योत्पत्तिर्यदुच्यते।“

वि (विशेष) + भावना (कल्पना) । सामान्यत: कारण के रहने पर ही कार्य होता है, परंतु कारण के अभाव में कार्य का होना विशेष कल्पना है। अतः विभावना (विशेष भावना) यही है।

उदाहरण- “ बिनु पद चलै सुनै बिनु काना।

कर बिनु कर्म करे विधि नाना।

आनन रहित सकल रस भोगी

बिन बानी बकता बड़ जोगी।“

यहाँ अंगों के अभाव में भी चलना, सुनना आदि कार्य होने का वर्णन किया गया है। अतः विभावना अलंकार

6- अतिशयोक्ति-

उपमेय को छुपाकर उपमान के साथ उसकी अभेद प्रतीति करना अतिशयोक्ति अलंकार है। अतिशयोक्ति का अर्थ है अतिशय उक्ति अर्थात् बढ़-चढ़कर बातें करना। उपमेय को सर्वथा छिपाकर उपमान को रख देना और दोनों में अभेद की प्रतीति कराना अतिशयोक्ति अलंकार है।

जैसे- नायिका के सुंदर मुख को देखकर कोई कहे -'अरे यार यह चांद देखो।' तो यहां मुख उपमेय सर्वथा छुपा हुआ है और चांद उपमान को रखकर मुख और चांद में अभेद दिखलाया जा रहा है। अतः अतिशयोक्ति अलंकार है।

उदाहरण- "अद्भुत एक अनुपम बाग

जुगल कमल पर गजवर क्रीडत

तापर सिंह करत अनुराग।"

यहां उपमेय का नाम न लेकर चरण के लिए युगल कमल, जांघन के लिए गजवर और कमर के लिए सिंह उपमानों द्वारा क्रमशः उनके बीच अभेद की प्रतीति करायी गई है। अतः अतिशयोक्ति अलंकार है।।

***